

A) General Information: -

1. Name of the Institute: मण्डलीय शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान दिलशाद गार्डन

2. Details of the Investigator(s):

Name	Designation	Place of posting at the time of project completion	Present place of posting	Contact No.	E-mail
डॉ. कुमुद भारद्वाज	प्रवक्ता (Lecturer)	मण्डलीय शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान दिलशाद गार्डन	मण्डलीय शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान दिलशाद गार्डन	981093307 7	drkumudbh ardwaj@g mail.com

3. Project/ Study Conducted Academic Session: 2015-16

4. Institute where Project/Study submitted: मण्डलीय शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान दिलशाद गार्डन

5. Theme of the Project/Study: Language Teaching Strategies

6. Level of the study: Teacher Education

B) Summary of the Conducted Research work/Project/Study: -

1. Title (अध्ययन का शीर्षक): शिक्षकों में वर्तनी संबंधी आम एवं सामान्य त्रुटियों का अध्ययन

2. Introduction (अनुसंधान का परिचय): भाषा के रूप में हिंदी का पहला और प्रमुख गुण ध्वन्यात्मकता है। हिंदी में उच्चारित ध्वनियों को व्यक्त करना सरल है। जैसा बोला जाए वैसा ही लिखा जाए। यह हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि का महत्वपूर्ण गुण है किंतु कई कारणों का प्रभाव हिंदी के इस गुण पर पड़ता है जैसे:-

- 1- आंचलिक उच्चारण का प्रभाव
- 2- अनेकरूपता
- 3- परंपरा का निर्वाह
- 4- भ्रम की स्थिति आदि।

उपरोक्त प्रभावों के कारण हिंदी भाषा के लेखन में कई प्रकार के दोष उत्पन्न हो जाते हैं। यदि यह दोष शिक्षकों में भी हो तो इन दोषों का विद्यार्थियों तक जाना स्वाभाविक है। जो की भाषा शिक्षा के लिए

उचित नहीं है। इन सबको ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध में शिक्षकों में वर्तनी संबंधी विविधता या दोष के कारणों की पहचान हो तथा उसका निराकरण भी हो सके।

3. Objectives (अनुसंधान प्रश्न / अनुसंधान के उद्देश्य):

- वर्तनी संबंधी त्रुटियों के कार्य कारण सम्बंधों को जानना।
- वर्तनी संबंधी त्रुटियों के पीछे होने वाले कारण को जानना एवं समझना।
- हिंदी भाषा कौशल के संदर्भ में वर्तनी की कुशलता की जांच करना।
- पूर्व शोध “ई. टी. ई. छात्रों में वर्तनी की आम / सामान्य त्रुटियों की पहचान” की शोध धारणाओं तथा परिणामों का प्रस्तुत अध्ययन से तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. Research Design:

- **Research method(s)(अनुसंधान पद्धतियाँ):** वर्णनात्मक शोध के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।
- **Tools and techniques(उपकरण और तकनीक) :** प्रस्तुत अध्ययन के लिए अध्ययनकर्ता ने स्वयं विकसित प्रश्नावली का प्रयोग किया है। कुल 50 प्रश्नों के आधार पर इस अध्ययन का परिणाम विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। आंकड़ों का विश्लेषण करने के लिए प्रतिशत का उपयोग किया गया।

5. Research findings (शोध के निष्कर्ष):

उत्तर पूर्वी जिले में शिक्षकों में हिंदी वर्तनी संबंधी सामान्य त्रुटियों के अध्ययन के उपरांत इन निष्कर्षों पर पहुंचा जा सकता है।

- हिंदी का विषय के रूप में अध्ययन करने वाले प्रतिभागियों का अध्ययन करने से यह निष्कर्ष निकलता है कि बी. ए. तथा एम. ए. स्तर पर अध्ययन करने वाले प्रतिभागी औसत से अच्छा कर पाए, जबकि 10 वी. और 12 वीं. स्तर पर हिंदी का विषय के रूप में अध्यापन करने वाले प्रतिभागी औसत से कम रहे। यद्यपि यह अंतर मामूली है किंतु भाषा के अध्ययन की दृष्टि से यह भी प्रभाव डालने वाला अंतर है।
- हिंदी एवं अंग्रेजी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं को माध्यम के रूप में 12वीं कक्षा तक होने वाले प्रतिभागियों का औसत प्राप्तांक अधिक रहा। जबकि इसके विपरीत हिंदी को माध्यम के रूप में 12वीं कक्षा तक लेने वाले प्रतिभागियों का औसत परिणाम अपने निचले स्तर पर रहा जो अध्ययनकर्ताओं की यह सामान्य समझ को परिवर्तित करने के लिए पर्याप्त है कि हिंदी माध्यम के रूप में शिक्षा प्राप्त करने से हिंदी वर्तनी में सुधार होता है।

- प्रश्नावली के प्रश्नों का विश्लेषण करने से निष्कर्ष निकलता है कि अति सरल श्रेणी के प्रश्नों को अधिक प्रतिभागी इसलिए हल कर पाए क्योंकि इन प्रश्नों में पूछी गई वर्तनी अधिकतर दैनिक उपयोग में आती रहती है जिसके कारण सतत अभ्यास प्रतिभागियों द्वारा होता रहता है।
- एक निष्कर्ष यह भी निकलता है। पुस्तकों में दोषपूर्ण वर्तनी का उपयोग की त्रुटियों के लिए जिम्मेदार होता है। वाक्य के अंत में 'ए' या 'ये' का प्रयोग हिंदी की पुस्तकों में पर्याय के रूप में अक्सर होता दिखाई देता है। जिसके कारण भ्रम की स्थिति पढ़ने वाले को रहती है अर्थात् वर्तनी का सतर्क और सजग प्रयोग का अभाव इस तरह की गलतियों की ओर संकेत करता है।
- अध्ययन का लैंगिंग आधार पर विश्लेषण करने से निष्कर्ष निकलता है, कि अध्यापक एवम् अध्यापिकाओं के प्रदर्शन में पुरुष अध्यापकों का औसत प्रदर्शन अपेक्षाकृत अच्छा रहा। इस निष्कर्ष को इस संदर्भ में भी देखें देखने की आवश्यकता है कि महिला अध्यापकों की संख्या पुरुष अध्यापकों से 3 गुना अधिक है। जिसके कारण तुलनात्मक रूप से प्रदर्शन में गुणात्मक अंतर दिखाई देता है।

6. Educational implications (शैक्षिक निहितार्थ) :

- हिंदी भाषा के अंतर्गत वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखें तो पता चलता है कि स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। यदि भाषित कौशलों पर ठीक से ध्यान दिया जाए तो स्थिति बदल भी सकती है। प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर कुछ सुझाव हैं जिनसे हिंदी शिक्षण में वर्तनी संबंधी त्रुटियों को सुधारा जा सकता है।
- वर्तनी सजगता पर अधिक बल देना चाहिए।
- प्राथमिक कक्षाओं से ही सही सुनकर सही लिखना इस पर बल देना चाहिए अर्थात् लेखन पर अधिक बल देने की आवश्यकता है।
- सुधारात्मक कार्यशालाएं लगातार होती रहनी चाहिए।
- पुस्तक प्रकाशन में वर्तनी के प्रयोग पर अतिरिक्त सजगता रखनी चाहिए।
- वर्तनी संबंधी त्रुटियों पर विद्यालय में अध्यापक को लगातार हर स्तर पर ध्यान दिलाने की आवश्यकता है।
- हिंदी भाषा के विशेषज्ञों को समय-समय पर अध्यापकों को संबोधित करने का अवसर मिलते रहना चाहिए।
- प्रत्येक सेमिनार में कम से कम एक दिन वर्तनी संबंधी गतिविधियों के लिए चाहिए।
- अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों को भी अपने पाठ्यक्रम में इस बात पर अधिक बल देना चाहिए।

7. Scope of the study (भविष्य का दायरा) :

हिंदी भाषा देश की प्रमुख भाषा है क्योंकि यह सर्वाधिक बोले जाने वाली भाषा है। इसमें की जाने वाली सामान्य त्रुटियों का निवारण करना अति आवश्यक है। इसलिए यह जानना भी हमारे लिए बहुत जरूरी है कि वरिष्ठ वर्ग के शिक्षकों की स्थिति किस प्रकार की है। यह अध्ययन उत्तर पूर्व जिले में किया गया है और अन्य जिलों में भी किया जा सकता है ताकि हिंदी में उनके द्वारा की गई सामान्य त्रुटियों का अध्ययन किया जा सके ।